समाज शास्त्र
बी० ए० I

मानव एवं पशु समाज
(Human And Animal society)

समाज शास्त्र के अन्तर्गत मानव समाज का वैज्ञानिक अध्ययन किया जाता है लेकिन विश्व में केवल मानव ही समाज में रहते हो ऐसी बात नही है मनुष्यो के अतिरिक्त अनेक कीड़े-मकोड़े पशु-पक्षी आदि भी समाज में व्यवस्थित जीवन व्यतीत करते है मानव एवं पशु समाज में कोई सम्बन्ध नही मानना वास्तव में आश्चर्य की बात होगी।

समाजो का वर्गीकरण —
(classification of societies)

समाज साधारणतः दो प्रकार के होते है। ① मानव समाज ② पशु समाज
पशु समाज की सामाजिक व्यवस्था वंश परम्परागत होती है। जैसे पशु के बछड़े जन्म लेते ही माँ का दूध पीना प्रारम्भ कर देते है। चीटिया

जन्म के पश्चात ही अपनी सामाजिक व्यवस्था में भाग लेना प्रारम्भ कर देती है पशुओं का सारा व्यवहार शारीरिक हस्तान्तरण मात्र है।

सर्व प्रथम हम यहां जैविक सामाजिक अर्थात पशु समाज पर विचार करेंगे, तत्पश्चात सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थात मानव समाज पर विचार प्रस्तुत करेंगे।

पशु समाज में सामाजिक व्यवहार —

पशु समाज में भी सम्पर्क तथा संचार पाया जाता है। उन्हें भी सामाजिक व्यवहार के लक्षण दिखलाई पड़ते हैं ये चिड़ियों से भिन्न प्रकार के प्राणी होते हैं।

मधुमक्खियों एवं चिड़ियों में भी सामाजिक व्यवस्था पायी जाती है इनमें भी रानी पायी जाती है। जो अण्डे देती है। रानी को विशेष प्रकार का

भोजन खिलाया जाता है अन्य कार्य करने वाली चीटियां एवं मधुमक्खियां आकार में छोटी होती है तथा अविकसित मादा होती है।

सामाजिक जीवन में पशु समाज को अनेक लाभ प्राप्त होते है जैसे— सरलता पूर्वक जीवन-यापन होना, कार्य कुशलता का बढ़ जाना सुरक्षा प्राप्त होना आदि।

स्तनपायी जीव समाज

स्तन-सम्बन्धी सामाजिक समूहो की एक विशेषता यह है कि उनके सदस्यो में शारीरिक विभेद कम से कम पाये जाते हैं। स्थाई शारीरिक विशेषताए केवल लिंगो के आधार पर कुछ मात्रा में पायी जाती है। स्तन पायी जीवो में बहुत से ऐसे जीव है।

स्तन धारी समाजो में सन्तानोत्पत्ति की योग्यता में पाये जाने से इन समाजो में यौन, कीट पतंगो की तुलना में अधिक भूमिका होती है।

प्राचार्य
मीरा मेमोरियल महाविद्यालय
शिक्षण एवं प्रशिक्षण संस्थान